

बनो रूप विकराल- मैया महाकाली
बिजली सी दमक रहीं आज मर्खी काली

द्विंकार्यें लट विशाल- नेत्र करें लाल-लाल
मुख मण्डल है विशाल- दोड़ी खड़गवाली

बनो रूप-----

चंद्रमा सोहत है भाल- चलत है मतवाली चाल
पहिने गले मुण्डमाल- खप्पर नहीं खाली

बनो रूप-----

ऐना सब मरत जात- रक्तबीज भगत जात
मारन खों घाई मैया- हंसी है निराली

बनो रूप-----

एक बूंद गिर न पाये- खप्पर में जा समाये
नाँच रहीं जोगनियाँ- दे-दे के लाहो

बनो रूप-----

सौम्य रूप मर्खी दिखाओ- माता बन के मुरकुराओ
देख के "श्री बाबा श्री" को- हू है खुशचाली

बनो रूप-----